सामाजिक कार्यकर्त्ता ने किया। भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने डॉ. जी. डी. अग्रवाल की मांग पर विचार करने तथा आवश्यक कदम उठाने का आश्वासन दिया।

सन् 2014 के संसदीय चुनाव के बाद जब श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत के प्रधानमंत्री का पद संभाला तो उन्होंने गंगा की सफाई तथा उसके बढ़ते प्रदूषण को प्रभावी ढ़ंग से नियंत्रित करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से 'नमामि गंगा' नाम की परियोजना शुरू करने की घोषणा जुलाई 2014 में की गयी। इसके लिए 10 जुलाई, 2014 को वित्त मंत्री श्री अरूण जेठली जी द्वारा प्रस्तुत किए गए बजट में 6300 करोड़ रूपए खर्च करने का प्रावधान रखा गया। इस रकम में से 2037 करोड़ रूपए गंगा की सफाई तथा प्रदूषण-नियंत्रण हेतु खर्च किए जाएंगे, तथा 4200 करोड़ रूपए नेविगेशन कौरीडोर के विकास पर खर्च किए जाएंगे। इसके अलावा लगभग 100 करोड़ रूपए घाटों के विकास तथा उसके सौंदर्यीकरण पर खर्च किए जाएंगे। रकम जुटाने हेतु 'एन.आर. आई.फंड' बनाया जाएगा जिसके अंतर्गत विदेशों में कार्यरत भारतीयों से धन प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा। 'नमामि गंगा' परियोजना को लागू करने की दिशा में प्रथम कदम के रूप में गंगा किनारे स्थापित 48 औद्योगिक इकाइयों को बंद करने का आदेश जारी किया गया है।

संदर्भ :

(1) वन इंडिया न्यूज, 10 जून, 2010
(2) प्रेस इनफॉरमेशन ब्यूरो, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सूचना, 9 अगस्त, 2011
(3) विकीपीडिया (पोल्युशन ऑफ गैंजेज)

संपर्क करें :

डॉ. विजय कुमार उपाध्याय
राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी,
के.के. सिंह कॉलोनी, पो.-जमगोड़िया,
वाया-जोघाडीह, चास, जिला-बोकारो,
झारखंड, पिन कोड : 827013

नया वर्ष

नया वर्ष इस तरह उदय हो।
जीवन का हर सुख अक्षय हो।

नए-नए हों स्वप्न, हृदय में नव आशाएं।
घर-आंगन में सुख के तरूवर, झूमें, गाएं।
मदन-मस्त हो चलें हवाएं, मन महकाएं।
नए-नए अनुभव जीवन में सुख बरसाएं।

धर्म और संस्कृति अजय हो।
नया वर्ष इस तरह उदय हो।

कोई कहीं अभाव नहीं हो, सुखद भाव हो।
सबके मन में अपनापन हो, क्यों दुराव हो।
नई-नई हो मित्र कल्पना, नया चाव हो।
लहरों पर इठलाती बहती हुई, नाव हो।

हर प्राणी, हर जीव अभय हो।
नया वर्ष इस तरह उदय हो।

सुगम-सरल हो मार्ग, राह में नहीं घात हो।
जीवन में हर लक्ष्य प्राप्त हो, नव प्रभात हो।
भय का वातावरण नहीं हो, मुदित गात हो।
बाधारहित चले जीवन, ज्यों जल-प्रपात हो।

दुःख पर सुख की सदा विजय हो।
नया वर्ष इस तरह उदय हो।

गत से भी ज्यादा सुंदर हो, आगत अपना।
पूरा हो जो भी देखा हो, हमने सपना।
हो प्रकाशमय जीवन, व्याप्त कभी हो तम-ना।
सुख-शांति-समृद्धि कहीं हों किंचित कम-ना।

तप्त नहीं हो, तृप्त हृदय हो।
नया वर्ष इस तरह उदय हो।

जहां-जहां पर पड़े सूर्य की, प्रथम यह किरण।
वहां-वहां मां लक्ष्मी के भी पड़े, शुभ चरण।
सुख-शांति ऐश्वर्य, संपदा नहीं हो क्षरण।
मेरी शुभकामना करे यों सभी का वरण।

सबको शुभकामना सदय हो।
नया वर्ष इस तरह उदय हो।

जल संचय

आओ जल का संचय कर लें।
बरखा की बूंदों को बांधे,
सागर की लहरों को बांधे,
धरती पर निर्झर की बांधे,
नदियां ओर सरोवर बांधे,
मन में ऐसा निश्चय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।
रोकें व्यर्थ बहाना जल का।
पानी खुला न छोड़ें नल का।
रोकें छत से पानी ढलका।
चिन्तन करना होगा कल का।
निश्चित मन में आशय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।
व्यर्थ एक भी बूंद नहीं हो।
कुछ भी आंखें मूंद नहीं हो।
जल-जीवन में खूंद नहीं हो।
मन में पड़ी फफूंद नहीं हो।
भावों में भावोदय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।
नए-नए हम वृक्ष लगाएं।
जंगल अब कटने ना पाएं।
प्रकृति से भी प्रीत निभाएं।
जीव-जंतु जीवित रह पाएं।
अपना भी आत्मोदय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।
निर्मित हों तालाब सरोवर।
नदियां भी हों देश धरोहर।
जन-साधारण को हैं सुखकर।
जीवित रहते इनमें जलचर।
जन-जीवन सर्वोदय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।
वृक्ष कटें मौसम बदलेंगे।
बादल भी राहें भूलेंगे।
खेतों में फिर क्या बो लेंगे।
प्यासे-प्यासे हम डोलेंगे।
वृक्ष लगा भाग्योदय कर लें
आओ जल का संचय कर लें।
जल भारत का जन-मन-गण है।
यह किसान का जीवन धन है।
छुपा इसी में अपनापन है।
जल के बिना धरा निर्धन है।
वृक्ष लगा ग्रामोदय कर लें।
आओ जल का संचय कर लें।

संपर्क करें :

श्री हितेश कुमार शर्मा, गणपति भवन, सिविल लांइस, बिजनौर -246701(उत्तर प्रदेश)